बिन खेल मैदान : भारत कैसे बने महान !

डा. अवधेश कुमार श्रोत्रिय

क्रीड़ा अधिकारी, बिरला इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी, ग्रेटर नॉएडा (उत्तर प्रदेश)

संस्थापक सचिव , प्ले इंडिया प्ले (ट्रस्ट)

Citation: - Shirotriya, A.K. (November, 2016). बिन खेल मैदान : भारत कैसे बने महान ! Editorial Page, Sports Kreeda News Paper, 5(2),4.

बीते अगस्त माह में ब्राजील के शहर रियो में आयोजित 31'वे ग्रीष्मकालीन ओलिंपिक का नशा लगभग हिंदुस्तानी के सर चढ़ कर बोला , शायद यह पहला ही ऐसा ओलिंपिक होगा जिसको हर उम्र के भारतवासी नें अपनी दैनिक चर्चा का विषय बनाया होगा, कमोवेश जिमनास्टिक जैसे खेल का लुत्फ़ भी काफी लोगो नें पहली बार ही अपनी टीवी स्क्रीन के माध्यम से उठाया होगा, पुरे रियो ओलिंपिक के दौरान एक ऐसा गर्मजोशी का माहौल बन गया था जैसा की हिंदुस्तान में क्रिकेट के विश्व कप के दौरान देखने को मिलता हैं / मैडल मिलने की महत्वकांशा खिलाड़ियों के साथ साथ हर हिंदुस्तानी को थी, शुरआती दौर में ज्यादा खुशनुमा माहौल देखने को नहीं मिला था लेकिंन बाद के दिनों में उदासीन रवैया दो मैडल पाने के साथ कुछ अलग रंग ले चूका था /

रियो ओलिंपिक के ख़त्म होते ही हमेशा की तरह कई प्रकार की खेलो और खिलाड़ियों के विकास की बात करने वाली समितियों नें जन्म लेकर आने वाले ओलिंपिक में बेहतर प्रदर्शन के लिए अपने अपने विचार और सुझाव भी देने शुरू कर दिए हैं /इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए ओलिंपिक के समापन के कुछ दिनों बाद ही माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी नें टास्क फा◌ॅर्स बनाने की घोषणा करने के साथ अपनी भावी महत्वकांशा को जग जाहिर कर दिया हैं / जमीनी हकीकत के मद्देनजर फिलहाल गंभीर मंथन का विषय यह हैं की खेल प्रतिभाओ के लोगो के होने के बावजूद भी आज भी सिर्फ हम कुछ मेडलों तक ही सिमट कर रह गए हैं / शीर्ष स्तर पर सुविधाओ की कमी पहले जरूर थी लेकिन लेकिंन निरंतर यथासंभव सरकारी प्रयासों से पिछले कुछ सालो में मिलने वाली आधुनिक सुविधाएं अपने आप में पर्याप्त हैं एक बेहतर प्रदर्शन के लिए/

हालाँकि खिलाड़ियों की नई पौध को तैयार करने के लिए निचले स्तर पर मिलने वाली सुविधाएं अभी भी बेबसी से राह ताक रही हैं अपनी गुणवत्ता की बेहतरी के लिए / ग्रामीण क्षेत्रो की खेल प्रतिभाओ और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2008 में पंचायत युवा क्रीड़ा और खेल अभियान जैसी महत्वकांशी परियोजना का खाका बहुत ही उम्मीदों के सहारे तैयार किया गया था लेकिन यह परियोजना भी भ्रष्टाचार और उदासीन रवैये की भेंट चढ़ती सी आसानी से देखी जा सकती हैं / अगर सुविधाओ के अभाव की वजह तलाशे तो कई सारी वजहों की फेहरिस्त तैयार की जा सकती हैं भारतीय खेल प्रतिभा के प्रतिभावान होने के बावजूद भी अपेक्षा के अनुरूप पदक न जीत पाने के लेकिन अगर हम जमीनी हकीकत की बात करे तो सर्वप्रथम खेलने के अच्छे मैदानों का आभाव ही हैं जो की बेहतर खिलाड़ियों की उत्पति में कई प्रकार से रोड़े अड़ाता हैं /

अभी हाल ही में मुम्बई की एक छात्रा नें माननीय मोदी जी से खेलने के मैदान के लिए गुहार लगायी और मोदी जी ने इस मुद्दे पर पहल कर उस छात्रा की बात को सम्बंधित विभाग तक भी पहुँचाया, यह एक कटु सत्य हैं वर्तमान समय में कई सारे विद्यालयों , महाविद्यालयों एवं कुछ विश्विद्यालयों में खेलने के पर्याप्त बुनियादी सुविधाएं तक उपलब्ध नहीं हैं /

सोचिये ऐसे में बिन मैदान कैसे मुमकिन हो पायेगा खेल ? इसमें कोई दो राय नहीं हैं की अगर खेलो के मैदान अगर सुसज्जित रूप से तैयार मिले तो हर किसी का उस मैदान की और खिंचाव चला जाता हैं और चेहरे पर खेलने की बेकरारी साफ रूप से छलकती हैं / खेलो के मैदान उस विज्ञानं की प्रयोगशाला की तरह होते हैं जहाँ विभिन्न प्रकार के प्रयोग करके जीवन शैली में रचनात्मक बदलाव किये जा सकते हैं / किन्तु कितने उम्दा मैदान पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं जिसका लाभ एक आम हिंदुस्तानी ले पा रहा हैं ? इसे इत्तफाक कहे या फिर लाचारी कहे की कई नोनिहालों को तो प्ले स्कूल और प्राइमरी विद्यालयों में भी पर्याप्त खेलने के मैदान तक तक नहीं मिल पाते हैं सर्वांगीड़ विकास के लिए जहाँ सबसे ज्यादा शारीरिक विकास को विकसित करने की बहुत ही जरुरत होती हैं /

ऐसे हालातो में कैसे नयी खेलो की प्रतिभाएं अपने में निखार ला पाएंगी ? और कैसे अन्तर्राष्ट्रीय खेल महाकुंभों जैसे राष्ट्रमंडल खेल और ओलिंपिक खेलो की पदक तालिका में पिछले प्रदर्शनों की तुलना में सकारात्मक सुधार होगा ?

यह सभी चिंतको एवं खेल नीति के निर्माताओ के लिए कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर मिलना भी एक चुनोती ही हैं / कई शहरो के स्टेडियमों की हालात भी कुछ ज्यादा अच्छे और काबिले तारीफ नहीं हैं /

खेलो में निराशानजक प्रदर्शन और खिलाड़ियों की अन्तराष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं में विफलताओं के कारण तलाशने को किये जाने वाले महंगे दौरों के बाद अपनी रिपोर्ट्स में बाहरी देशो की जलवायु को मुख्य कारण बताकर मंत्रालय को रिपोर्ट सौपने वाले लोगो को भी यह मानना ही पड़ेगा की विदेशो की जलवायु को तो शायद हम भारत के अनुकूल न बना पाए लेकिन नए खेल के मैदानों का निर्माण और उपलब्ध मैदानों का जीर्णोद्धार तो आसानी से किया ही जा सकता हैं / मौजूदा दौर में विकसित हिंदुस्तान की गगनचुम्बी इमारतों के बीच भी मैदानों के लिए पर्याप्त जगह को न ढूंढ पाने से दुहाई देने से लाख गुना बेहतर हैं की लाखो हेक्टेयर विवादित भूमि के टुकड़ो को ही खेलने के मैदान में तब्दील करने का पुरजोर प्रयास किया जाये , इस कार्य में सरकार के साथ साथ हर हिंदुस्तानी को कंधे से कन्धा मिलाकर कदम बढ़ाना होगा खेलो के सुनहरे भविष्य के लिए /

साथ ही साथ शैक्षणिक संस्थाओ को भी देश के हित के लिए उपलब्ध बेहतर खेल मैदानों और अन्य जरुरी संसाधनों को भी एक निश्चित अवधि के लिए आवंटित करने से भी कई जरूरतमंदों खिलाड़ियों को बेहतर खेल के मैदान मिल पाएंगे अपने कौशल को निखारने के लिए / आदर्श सांसद ग्राम योजना के तहत अगर एक माननीय भी अपने संसदीय क्षेत्र में एक मिनी स्टेडियम अथवा ग्रामीण खेलो के मैदान के निर्माण का संकल्प ले तो निश्चित रूप से सम्पूर्ण भारतवर्ष में कितने खेलो के मैदान मात्र कुछ सालो में ही तैयार हो जायेंगे / अगर ऐसा संभव हो जाये तो सोचिये जितने होंगे खेलो के मैदान उतना ही स्वस्थ और खेलो में शक्तिशाली बन जायेगा हिंदुस्तान /